विद्या -भवन ,बालिका विद्यापीठ, लखीसराय
नीतू कुमारी ,वर्ग - चतुर्थ,,हिंदी, दिनांक--24-04-2021
एन.सी.ई.आर टी पर आधारित. पाठ -2
सुप्रभात बच्चअॅ, गुरु नानक

समय–समय पर हमारे देश में अनेक महापुरुषों का जन्म हुआ है। उन्होंने भाईचारे की एकता का संदेश दिया। ऐसे ही एक महापुरुष गुरु नानक थे। वे सिक्खों के प्रथम गुरु थे। गुरु नानक का जन्म सन् 1468 ई0 में कार्त्तिक पूर्णिमा को तलवंडी नामक गाँव में हुआ था। यह स्थान अब पाकिस्तान में है। इस स्थान को ननकाना साहब कहते हैं। उनके पिता का नाम कालूचंद पटवारी और माता का नाम तृप्ता देवी था। नानक की एक बड़ी बहन भी थी। उसका नाम नानकी था।

आठ वर्ष की आयु में नानक को पढ़ने के लिए पाठशाला भेजा गया। लेकिन उनका मन पढ़ने में नहीं लगता था। वे सदा ईश्वर के संबंध में सोचा करते थे। घर पर उनको खर्च के लिए जो कुछ पैसे मिलते थे, उन्हें वे गरीबों में बाँट देते थे।

पिता ने देखा कि बालक का मन पढ़ने में नहीं लगता, तो उन्होंने एक दिन अपने पुत्र को चालीस रुपये देकर लाहौर भेजा। उन्होंने नानक से कहा–"बेटा! इन रुपयों से व्यापार करके, कुछ कमा लाओ।"

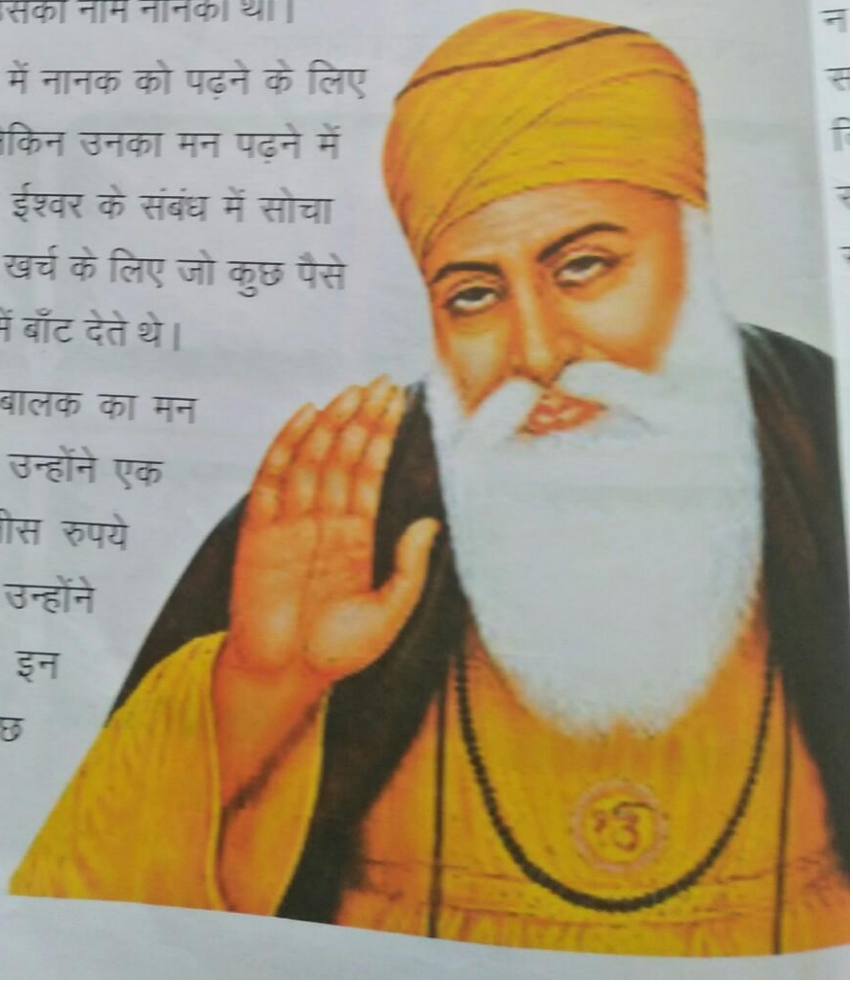

नानक लाहौर की ओर बढ़ने लगे। मार्ग में उन्होंने साधुओं की एक टोली देखी। उन्हें मालूम हुआ कि साधु तीन दिन से भूखे हैं। उनका हृदय पिघल गया। उन्होंने तुरंत सारे रुपये साधुओं को भोजन कराने में खर्च कर दिए। इसके बाद वे खाली हाथ घर लौट आए। पिता को पुत्र के इस कार्य से बहुत दुख हुआ। उन्होंने नानक को बहुत डाँटा, पर उनके व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

पिता ने पुत्र को सुधारने के लिए उनका विवाह सुलक्षणी नामक कन्या से कर दिया। उनके श्रीचंद और लक्ष्मीचंद नाम के दो पुत्र हुए। परंतु नानक का मन गृहस्थी में न लगा। वे जो कुछ कमाते थे, दीन–दुखियों में बाँट देते थे। उनकी पत्नी ने उन्हें बहुत समझाया, लेकिन नानक पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने घर–बार छोड़ दिया। वे घूम–घूमकर उपदेश देते थे। उनके उपदेशों का सार था–"ईश्वर एक है। हम सबको उसी ने बनाया है। हिंदू–मुसलमान सब उसी की संताने हैं। उसकी दृष्टि में सभी समान हैं। अच्छे काम करने से ही वह प्रसन्न होते हैं।"

वे धीरे–धीरे 'गुरु नानक' के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

नानक के मुख्य शिष्य थे–बाला और मरदाना। अपने शिष्यों के साथ उन्होंने तीन बार भारत के प्रसिद्ध स्थानों की यात्रा की। एक बार वे घूमते–घूमते बगदाद पहुँचे। वहाँ के शासक ने गरीबों को सताकर बहुत धन इकट्ठा किया था। नानक ने उसकी आँखें खोलनी चाही।

वे बहुत से कंकड़–पत्थर एकत्रित कर उसके महल के पास बैठ गए। अगले दिन शासक उधर से जा रहा था। उसने नानक से पूछा, "यह सब क्या है?"

नानक ने उत्तर दिया–"मैंने सुना है कि आपने बहुत–सा धन इकट्ठा किया है और मरने पर आप उसे साथ ले जाएँगे। अतः मैं भी इन्हें ले जाऊँगा।" इस उत्तर का

बच्चअॅ ,दिए गए कहानी को पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें|